International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 758-759

विष्णु पुराण में लोकरंजन के साधन

डॉ0 प्रीति विजय
संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

विष्णु पुराणकालीन लोकरंजन के साधनों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उस समय नाना प्रकार के लोकरंजन के साधनों का आविष्कार हो चुका था। इनका वर्णन इस प्रकार है :–

मृगया

विष्णु पुराण में मृगया का वर्णन अनेक स्थानों पर मिलता है। मृगया केवल राजाओं के मनोरंजन का साधन था। राजा सौदास के पुत्र मित्रसह के विषय में उल्लेख मिलता है कि उन्होंने मृगया के लिए वन में घूमते–घूमते सम्पूर्ण वन को मृगहीन कर दिया था। उसने दो व्याघ्रों में से एक को बाण से मार दिया।[1]

राजा प्रसेन जो मृगया के लिए वन में गया था, वहां उसे सिंह ने मार डाला।[2] अन्यत्र राजा शान्तनु का भी मृगया के लिए वन में जाने का उल्लेख प्राप्त होता है।[3]

इन समस्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि उस समय सिंह, व्याघ्र एवं मृगादि अनेक पशुओं का शिकार किया जाता था।

मत्स्य पुराण में मृगया को राजार्थ निषिद्ध किया गया है।[4]

महाभारत में मृगया को मनोरंजन का बड़ा लोकप्रिय साधन माना है। शासक वर्ग में यह विशेषतः लोकप्रिय था। राजन्य वर्ग की जो वृत्ति शत्रुओं के वध में होती है, वही वृत्ति मृग–वध में भी पायी जाती है।[5]

डॉ. रमन पाल का कथन है कि मृगया का प्रचलन वैदिक काल से ही है। वैदिक काल में पशुओं के शिकार के अतिरिक्त पक्षियों के शिकार का भी उल्लेख मिलता है।[6]

डॉ. मंजुला जायसवाल ने भी रामायण काल में मृगया को महादुष्ट व्यसन कहा है।[7]

मनु ने मृगया की गणना कामज व्यसनों में की है तथा मृगया को महादुष्ट व्यसन कहा है।[8]

अन्यत्र विष्णु पुराण में मृगया के दुष्परिणाम भी मिलते हैं। जब पाण्डु वन में मृगया विहार कर रहे थे, तो ऋषि के श्रापवश वे सन्तानोत्पादन में असमर्थ हो गए थे।[9]

खेल और मनोरंजन के साधन

जल–क्रीड़ा

विष्णु पुराण में सहस्रार्जुन के जल में क्रीड़ा करने का उल्लेख मिलता है। वह नर्मदा के जल में मद्यपान से व्याकुल होकर क्रीड़ा कर रहा था। यह एक मनोरंजन का साधन था।[10]

जुआ खेलना

विष्णु पुराण में ऋतुपर्व जो राजा नल का सहायक था उसे द्यूतक्रीड़ा का पारदर्शी कहा गया है।[11]

अन्यत्र विवेच्य पुराण में रुक्मी तथा बलराम के द्यूतक्रीड़ा करने का उल्लेख मिलता है। रुक्मी जुआ खेलने में निपुण था, इसलिए उसने बलराम के साथ खेलते हुए दोनों दाँव जीत लिए थे। बलराम द्यूतक्रीड़ा से अनभिज्ञ था, इसलिए वह हार गया। विष्णु पुराण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जुआ मनोरंजन करने के लिए खेला जाता था।[12] मनु ने जुआ खेलना राजा का चारित्रिक अवगुण माना है।[13]

मत्स्य पुराण में जुआ खेलना मनोरंजन का साधन कहा गया है। इसमें वर्णन है कि द्यूत में कुशलता दिखाकर राजा को प्रसन्न करना चाहिए। अन्यत्र वर्णन मिलता है कि राजा को इसका परिहार करना चाहिए, क्योंकि वह राज विनाश का कारण होता है।[14]

जुए का उल्लेख वैदिक साहित्य में भी मिलता है। ऋग्वेद में द्यूत का संबंध गण से हुआ है।[15]

शतपथ ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि राजसूय यज्ञ के समय यज्ञकर्त्ता जुआ खेलता था।[16]

झूला

विष्णु पुराण में झूले का उल्लेख श्रीकृष्ण कथा प्रसंग में मिलता है। वहां श्रीकृष्ण और बलराम द्वारा की गई क्रीड़ाओं में झूला–झूलने का वर्णन है।[17]

वायु पुराण में स्त्रियों द्वारा झूला झूलकर मनोरंजन करने का वर्णन मिलता है।[18]

डॉ. मंजुला जायसवाल के अनुसार – वैदिक काल से ही झूला मनोरंजन का साधन रहा है।[19]

मल्ल युद्ध

विष्णु पुराण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मल्ल–युद्ध भी लोकरंजन का साधन था। विष्णु पुराण में मल्लयुद्ध द्वारा मनोरंजन करने का उल्लेख भी श्रीकृष्ण कथा–प्रसंग में मिलता है।[20]

अन्यत्र विष्णु पुराण में मल्लयुद्ध का वर्णन कंस–वध प्रसंग में मिलता है। इसमें मल्लयुद्ध में कुशल चाणूर तथा मुष्टिक नामक दो मल्लों का भी उल्लेख मिलता है।[21]

महाभारत में मल्लयुद्ध का उल्लेख उत्सव के समय मिलता है, जिसमें भाग लेने के लिए अनेक मल्ल आते हैं।[22]

रामायण में श्रीराम का मल्ल–युद्ध द्वारा मनोरंजन करने का उल्लेख मिलता है।[23]

उत्सव

विष्णु पुराण के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय उत्सव लोगों के मनोरंजन के लिए मनाए जाते थे। दैत्यों पर विजय प्राप्ति के पश्चात् देवताओं द्वारा अपना मनोरंजन करने के लिए उत्सव मनाने का उल्लेख मिलता है।[24]

अन्यत्र विष्णु पुराण में चतुर्दशी के उत्सव पर जनता के मनोरंजन के लिए मल्ल–युद्ध का प्रबंध किया था। नगर की महिलाओं और पुरुषों के बैठने के लिए मंच बनवाए थे।[25] इन्द्रोत्सव के समय भी

गोपों द्वारा उत्साह एवं खुशी के साथ तैयारी करने का वर्णन मिलता है।[26]

मत्स्य पुराण में भी उत्सव को लोकरंजन का साधन कहा गया है।[27] रामायण में अभिषेकोत्सव को प्रजा का आमोद–प्रमोद का साधन कहा गया है।[28]

श्रीमती रमन पाल के अनुसार उत्सव या मेले द्वारा मनोरंजन की परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है।[29]

रास–मण्डल

श्री कृष्णचन्द्र ने निर्मल आकाश, शरच्चन्द्र की चन्द्रिका और दिशाओं को सुरभित करने वाली विकसित कुमुदिनी तथा वनखण्डी को मुखर मधुकरों से मनोहर देखकर रमण करने की इच्छा की। गोपियों के चंचल ककणों की झंकार होने लगी और गोपियां गीत गाने लगी। श्रीकृष्ण ने गोपियों में एक–एक का हाथ पकड़कर रास मण्डल की रचना की थी। इस समय गोपियों द्वारा नृत्य भी किया गया। विष्णु पुराण में वर्णित यह रासमण्डल गोप तथा गोपियों के मनोरंजन का साधन कहा गया है।[30]

मत्स्य पुराण में शिव–विवाह के समय उनके गण वीरभद्र द्वारा अन्य गणों को रास–रचना के आदेश का उल्लेख मिलता है।[31]

संदर्भ

1. सुदासात्सौदासो मित्रसहानामा।। च चाटव्यां मृगयाथी पर्यटन व्याघ्रद्वयमपश्यत।। ताभ्यां तद्वनमपमृगं कृतं मत्वैकं तयोर्बाणेन जघान।। –वि.पु. 4/4/40–42
2. .....प्रसेनस्तेन.....मृगयामगच्छत्।। तत्र च सिंहाद्वधमवाप।। – वि.पु. 4/13/30–31
3. तौ च मृगयामुपया.....।। – वि.पु. 4/19/67
4. म.पु. 45/6
5. महा. आदिपर्व 109/12
6. ऋग्वेद में लौकिक सामग्री–डॉ. (श्रीमती) रमन पाल, पृ. 95
7. वाल्मीकि युगीन भारत, डॉ. मंजुला जायसवाल, पृ. 243
8. मनु. 7/46, 50
9. पाण्डोरप्यरण्ये मृगयामृषिशापोपहतप्रजाजनन– सामर्थ्यस्य धर्म.....।। – वि.पु.4/20/40
10. महिष्मत्यां दिग्विजया.....नर्मदाजलावगाहन क्रीडति.....।। – वि.पु. 5/11/19
11. तत्पुत्रश्च ऋतुपर्वः, योऽसौ नलसहायोऽक्षहृदयज्ञोऽभूत्।। – वि.पु. 4/4/37
12. वि.पु. 5/28/11–18
13. मनु. 7/50
14. म.पु. 216/8, 220/8
15. ऋ. 10/34/12
16. श.ब्रा. 5/3/1–15
17. ततस्त्वान्दोलाकाभिश्च.....। वि.पु. 5/9/7–8
18. वा.पु. 54/35
19. वाल्मीकि युगीन भारत, डॉ. मंजुला जायसवाल, पृ. 111
20. .....नियुद्वैश्च महाबलौ.....।– वि.पु. 5/9/8
21. आनयौ भवता गत्वा मल्लयुद्धाय तत्र तौ। चाणूरमुष्टिकौ मल्लौ नियुद्धकुशलो मम्।। – वि.पु. 5/15/15–16
22. महा. विराट पर्व 12–13
23. वा.रा. 2/32/4
24. जितेष्वसुरसङ्घेषु मेरुपृष्ठे महोत्सवः। भूव तत्र गच्छन्त्यो ददृशुस्तं सुरस्त्रियः।।–वि.पु. 5/38/72
25. वि.पु. 5/20/25–29
26. वि.पु. 5/10/16–18
27. म.पु. 160/27–28
28. वा.रा. 4/25/34
29. ऋ. में लौं.सा., रमनपाल, पृ. 104
30. वि.पु. 5/13/14–16, 48–58
31. म.पु. 154/462